ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

''बिहार के आर्थिक विकास में पर्यटन की स्थिति एवं सम्भावनाएँ : दरभंगा जिला के संदर्भ में''

रमण कुमार ठाकुर (*शोधर्थी*)
स्नाकोत्तर अर्थशास्त्र विभाग, ल0ना0मि0 विश्वविद्यालय, कामेश्वर नगर, दरभंगा

प्रस्तावना

बिहार के आर्थिक विकास में पर्यटन की स्थिति एवं सम्भावनाएँ : दरभंगा जिला के संदर्भ में'' शोध अध्ययन से सम्बंधित है। पर्यटन उद्योग में होने वाले समस्याओं का अध्ययन किया गया है। भारत में पर्यटन की अपार संभावनायें होते हुये भी विश्व पर्यटन बाजार में भारत का हिस्सा एक प्रतिशत से भी कम है। चीन का दावा है कि वहॉ प्रति वर्ष 5 करोड़ विदेशी पर्यटक आते हैं। थायलैण्ड, सिंगापुर, इण्डोनेशिया जैसे छोटे देशों में प्रतिवर्श 50–50 लाख तक पर्यटक आते हैं। कई देशों की अर्थ व्यवस्था का मुख्य आधार पर्यटन ही है। इसका मुख्य कारण राजनैतिक इच्छा शक्ति, पर्याप्त आधारभूत सुविधायें, जैसे भोजन, परिवहन, बिजली, साफ–सफाई मनोरजन, सुरक्षा आदि ये सुविधायें हमारे यहां अपर्याप्त एवं गुणवत्ताहीन है। वर्तमान में पर्यटन प्रदश की आर्थिक स्थिति को सुदृढ करता है। इसके द्वारा जहाँ स्थानीय लोगों को रोजगार मिलता है वहीं उस पर्यटन क्षेत्र का विकास भी होता है, पिछले दो दशकों में पर्यटकों की संख्या में तीव्र गति से वृद्धि हुई है।

परिणाम स्वरूप भारत में विदेशी पयर्टका की स्थिति निम्न सारिणी से स्पष्ट हो रही हैः–

भारत में विदेशी पर्यटकों का आगमन (सन् 2001 – 20014 तक)

बर्ष	विदेशी पर्यटकों की संख्या (मिलियन में)	वृद्धि
2001	2.54	–4.2
2002	2.38	–6.0
2003	2.73	14.3
2004	3.46	26.8
2005	3.92	13.3
2006	4.45	13.5
2007	5.08	14.3
2008	5.28	4.0
2009	5.17	–2.2
2010	5.78	11.08
2011	6.31	9.2
2012	6.58	5.4
2013	6.97	6.0
2014	7.68	10.0

स्रोत – पर्यटन मंत्रालय की वार्षिक रिर्पोट

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

उपरोक्त सारिणी से स्पष्ट है कि भारत में विदेशी पर्यटकों की स्थिति संतोशजनक नहीं है। कुछ वर्षों में तो पर्यटकों की संख्या में वृद्धि के स्थान पर कमी देखी जा सकती है। भारत के सर्वाधिक आकृषिक पर्यटन स्थल ताजमहल में पिछले वर्षों में विदेशी पर्यटकों की संख्या में कमी देखी गई है। अतः अब हमें पर्यटकों की संख्या में वृद्धि हेतु अन्य क्षेत्रों पर ध्यान केन्द्रित करना होगा।

बिहार राज्य विशेषकर दरभंगा जिला को कृषि प्रधान माना गया है। जिसके अर्न्तगत खरीफ फसले, रबी फसलें के लिए यहाँ की धरती उपयुक्त है, किन्तु कृषि से संबंधित संसाधन जैसे पूंजी का अभाव, सिचाई का अभाव, बीज का अभाव एवं उर्वरक का अभाव आदि इसके मार्ग में बाधक है, इतना ही नही उत्तर बिहार में दरभंगा जिला बाढ़ और सुखड़ की पर्यायवाची बन गया है। ऐसी स्थिति में भारत सरकार और बिहार सरकार द्वारा पर्यटन उद्योग को दर्जा देने के लिए कानून बने है और पुरात्त्व द्वारा जो प्रयास किये गये है, जो सराहनीय कहा जा सकता है परंतु बिहार में अब तक दो–चार स्थलों जैसे गौतम बुद्ध की जन्म भूमि, वैशाली भगवान महावीर की जन्म भूमि है। गया में भगवान बुद्ध की ज्ञान की प्रप्ति हुई थी, इसे छोड़कर बाँकी बहुत सारी स्थल जो पर्यटन के रूप में विकसीत हो सकती है। उस ओर न तो सरकार का ध्यान गया है और न ही शोधकत्ताओं का ही जो यह बतला सके की दरभंगा जैसे जिला को गया तथा वैशाली की तरह पर्यटन के रूप में देख जा सके।

दरभंगा जिला में बहुत ऐसी एतिहासिक स्थल है जिसका विकास किराया जाय तो निश्चित तौर पर गया और वैशाली जिला के तुलना में कम नही तुलेंगे, आवश्यकता इस बात की है कि सरकार की पुरात्तव विभाग, सूचना एवं तकनीकी विभाग अपनी सक्रियता बढ़ाये, साथ ही शोध का बिषय इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि मेरा जन्म स्थल अहिल्या स्थान के समीप है, जो अन्तराष्ट्रीय स्थल के रूप में विकसित हो सकता है। सरकार के द्वारा इस क्षेत्र में हाल में कुछ प्रयास किसे गये है परंतु दिशा विहीन होने के कारन सरकारी तंत्र इस क्षेत्र में आगे नही बढ़ रहे है। दरभंगा राज परिसर अपने आप में एक पर्यटन स्थल का कार्य कर सकता है जहाँ दो – दो विश्वविद्यालय और लंबी चौड़ी जमीन विश्वविद्यालय को मिला हुआ है, यदि उनका सौर्दर्यीकरण करें और पर्यटन का निर्माण किया जाय तो निश्चित रूप से यह भी पर्यटन स्थल के रूप में कार्य करेगा।

वर्ल्ड ट्रैवल एंड टूरिज्म के अनुमानों के अनुसार, भारत में पर्यटन क्षेत्रा ने 2012 में भारत के सकल घरेलू उत्पाद में 6.6 प्रतिशत का योगदान किया और लगभग 4 करोड़ रोजगार पैदा किए जो इसके कुल रोजगार का 7.7 प्रतिशत है। वर्ष 2012–13 में पर्यटन क्षेत्रा का 7.9 प्रतिशत की वार्षिक दर से बढ़ना अनुमानित था। समृद्धि सांस्कृतिक विरासत और चारो ओर फैले ऐतिहासिक स्मारकों/ स्थानों के लिहाज से बिहार में भो पर्यटन की जबर्दस्त संभावना है। बिहार के विभिन्न ऐतिहासिक, पुरातात्विक और धर्मिक स्थल राष्ट्रीय–अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों को समान रूप से आकर्षित करते हैं। राज्य सरकार के पर्यटन विभाग ने राज्य में 7 पर्यटन परिपथों की पहचान की है : (क) बौद्ध परिपथ – बोधगया, राजगिर, नालंदा, पटना, वैशाली, लौरिया, विक्रमशिला और जहानाबाद (ख) सूफी परिपथ – मनेरशरीफ, बिहारशरीफ, जहानाबाद, फुलवारीशरीफ, सासाराम और मुंगेर (ग) जैन परिपथ – पावापुरी, राजगिर, पूर्वी चंपारण, मंदार और बासोकुंड (घ) रामनगर परिपथ – वाल्मीकिनगर, सीतामढ़ी, दरभंगा, गया, बक्सर, भोजपुर, जमुई, औरंगाबाद और जहानाबाद (च) शक्ति परिपथ – पटना, आमी, थावे, उच्चैत और उग्रतारा (महिषी) (छ) सिख परिपथ – पटना साहिब, लक्ष्मीपुर, गया और सासाराम तथा (ज) गांधी परिपथ – पटना, मोतिहारी और भितिहरवा। पर्यटन विभाग पर्यटकों को बुनियादी सुविधएं, आवश्यक जानकारियां और सुरक्षा प्रदान करने का प्रयास कर रहा है ताकि उनकी यहां की यात्राओं में लगातार वृद्धि हो। फलतः, हाल के वर्षों में बिहार आने वाले देशी और विदेशी, दोनो प्रकार के पर्यटकों की संख्या लगातार बढ़ी है। अपवाद सिर्फ पिछला वर्ष रहा है जब इसमें 2013 की अपेक्षा थाड़ी गिरावट आई थी। जिलावार आंकड़े भी यही रुझान दर्शाते है।

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

पर्यटकों का वर्षवार आगमन

(संख्या हजार में)

वर्ष	देशी पर्यटक	विदेशी पर्यटक	योग	प्रतिशत परिवर्तन
2008	11890	346	12236	16.2
2009	15518	423	15941	30.28
2010	16043	541	16584	4.03
2011	18397	972	19369	16.79
2012	21447	1097	22544	16.39
2013	21588	766	22354	-0.84
2014 सितंबर	10140	578	10718	

स्रोत : पर्यटन विभाग, बिहार सरकार

पर्यटन विभाग ने हाल के वर्षों में अपने लगभग पूरे बजट का उपयोग कर लिया है। हालांकि 2013–14 में विभाग लगभग 65.53 करोड़ के स्वीकृत बजट में से 59.42 करोड़ रु. का ही उपयोग कर सका जो बजट आबंटन का लगभग 91 प्रतिशत है।

जिलों के बीच देशी–विदेशी पर्यटकों का सर्वाधिक प्रवाह गया में दर्ज किया गया और उसके बाद पटना में। घरेलू पर्यटकों के लिए अन्य आकर्षणों में सोनपुर मेला और भागलपुर के सुल्तानगंज में श्रावणी मेला थे। राज्य सरकार पर्यटन के विकास के प्रति बहुत उत्सुक है और इसे नई उचाइयों तक ले जाना चाहती है। इस लिहाज से इसने निम्नलिखित कदम उठाए हैं। समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और ऐतिहासिक स्मारकों को देखते हुए बिहार में पर्यटन की भारी संभावना है। राज्य के पर्यटन विभाग ने राज्य में 7 पर्यटन परिपथों की पहचान की है। हाल के वर्षों में बिहार में देशी–विदेशी पर्यटकों की संख्या लगातार बढ़ी है। सिर्फ 2013 में थोड़ी कमी आई थी।

पर्यटन के कारण अध्ययन क्षेत्र का संपूर्ण आर्थिक परिदृश्य परिवर्तित हो गया है। इस क्षेत्र में कला उद्योग, होटल व्यवसाय, यातायात के साधन, बुनियादी वस्तुओं की उपलब्धता हेतू संचालित व्यवसायिक प्रतिष्ठान पर्यटक गाईड के रूप में लगभग 10000 व्यक्तियों को न केवल प्रत्यक्ष रूप से रोजगार प्राप्त हो रहा है अपितु अप्रत्यक्ष रूप से भी लाखों व्यक्ति पर्यटन उद्योन से आय प्राप्त कर रहे हैं। परिणामस्वरूप पर्यटन उद्योन क्षेत्र के आर्थिक परिदृश्य में गुणवत्तपूर्ण बदलाव आया है।

संबंधित अध्ययन–

बिहार के आर्थिक विकास में पर्यटन की स्थिति एवं सम्भावनाएँ : दरभंगा जिला के संदर्भ में'' अध्ययन से संबंधित संदर्भ में अनेंक विद्वानों ने पर्यटन संबंधी अपने विचार दिये है।

कौल (1985, डायनामिक्स ऑफ टुरिज्म : ट्राईलोजी) ने प्रदेश, राष्ट्र और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पर्यटन को बढाव देने के लिए बहुत सारी क्रियाविधि का उल्लेख किया है। इन्होंने अपनी पुस्तक में प्रदेश स्तर पर पर्यटन व विकास के स्वरूप की बात कही है। इसके अलावा इन्होंने अपनी एक अन्य पुस्तक में विभिन्न दृष्टीकोण से पर्यटन के क्षेत्र वा विस्तार में आवास की भूमिका का मूल्याकन किया है। नेगी (1990, टुरिज्म एवं ट्रेवल : कौनसेप्टस) ने विकासशिल देशों में पर्यटन सामाजिक आर्थिक वा भू–पर्यावरणीय प्रभाव का अध्ययन किया। इन्होंने स्पष्ट किया कि एक आर्थिक तथा औद्योगिक क्रियाविधि है जिसमें बहुत सारी स्वतन्त्र कार्यशालाएँ, निगम तथा संगठन एवं संस्थाएँ कार्यरत हैं तथा जो एक–दुसरे से प्रत्यक्ष रूप से

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

सम्बधित हैं। यह आर्थिक दृष्टी से अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योकि यह आय के स्रोत का एक साधन है। इससे यातायात के साधन उन्नत अवस्था को प्राप्त होते हैं तथा क्षेत्रिय विकास में सहयोग प्रदान करते हैं। गुप्ता (1987, टुरिज्म इन इण्डिय) ने बताया कि पर्यटन का विकास तेजी से सुनियोजित ढंग से हुआ है। पुरानी यादगाारें या संस्मरण या संस्मरण चिन्हों का रखरखाव समुचित तरिके से किया जाय। उनका मैलिक आकार बरकरार रखना चाहिए। बहुत से पिकनिक स्थल स्थापित किये गये और उन्हें सजाया संवारा गया, जिससे पर्यटक आकर्षित हो सकें तथा तत्कालीन समय की सही जानकारी हासिल कर सके। इस तरफ विभिन्न राज्यों के पर्यटकों की सुविधा हेतु अत्यधिक मात्रा में पैसा भी खर्च किया है। इसके लिए उन्होनें अनेक स्थानो पर होटल, हाट, बंगला, विश्राम घर आदि का निर्माण किया। यातायात व्यवस्था का भी विस्तार किया गया। मिश्रा एवं उनके सहयोगी (1981, वर्ल्ड टुरिज्म) ने भारत में पर्यटन के प्रभाव और भूमिका के सम्बंध में विचार करने के साथ –साथ 42 देशों के भिन्न –भिन्न आर्थिक प्रकारों का भी जिक्र किया है। वे इस विचार से सहमत थे कि पर्यटन भारत के एक महत्वपूर्ण क्रिया है। पर्यटन का बढता हुआ महत्व यह सिद्ध करता है कि दनिया के प्रत्येक भाग से पर्यटको के अधिकाधिक अवस्थपनाएँ आधुनिक है। देश में पर्यटन विकास के स्तर को बेहतर करने हेतु बहुत सी एजेंसियाँ कार्यरत है। भारत के पर्यटन दक्षता प्रतिवर्ष पर्यटकों की संख्या में बढ़ोतरी के आर्कषण हेतु कृत संक्लप है।

यह अध्ययन वैसे पुस्तक कि ओर इसारा करता है कि इन अध्ययनों में किसी विशेष क्षेत्र के नही होने के कारण शोधार्थी के लिए उतनी नही रह जती है। इस प्रकार पर्यटन पर किये गये अभी तक के अध्ययन में बिहार में पर्यटन की प्रमुख समस्याओं तथा सम्भावनाओं का अध्ययन नही किया गया है, अभी तक पर्यटन के समस्याओं तथा इसके निदान का अध्ययन तो किया गया है लेकिन बिहार में पर्यटन की सम्भावनाओं पर अध्ययन नहीं किया गया है, अतः इन्हीं सम्भावनाओं को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत शोध का विषय बिहार में पर्यटन की समस्याएँ एवं सम्भावनाएँ : दरभंगा जिला क संर्दभ में अध्ययन के लिए चुना गया है।

अध्ययन का उद्देश्य–

पर्यटन ज्ञान – विज्ञान आर्थीक और समाजिक रूप को अपने आप में महत्व रखता है। यह लगभग बिहार के सभी जिले के लिए उदाहरण बन सकता है, लेकिन मिथिला की भूमि में दरभंगा का अपना एक विशिष्ठ स्थान इस क्षेत्र म है, जहॉ दरभंगा महराजा का एक किला, मंदीर, बड़े बड़े बगीचें दो–दो विश्वविद्यालय और विभिन्न प्रकार के एतिहासिक तिर्थस्थान आदि है। यदि इनका विकास पर्यटन के दृष्टि से किया जाता है, तो दरभंगा जिला का आर्थीक एवं समाजिक स्थिति इसके माध्यम से भी अच्छी हो सकती है। अबतक इस नविन विषय पर किसी ने काम नही किया है, इसलिए यह बिषय अबतक अछुता कहा जा सकता है। दरभंगा जिला के ऐतिहासिक स्थानों का विभिन्न ढ़ंग से विकास होता है, तो देश विदेश के पर्यटक इसे देखने के लिए आवेंगे जिससे देश और विदेशी मुद्दे के रूप में आय की प्रप्ति होगी, लोगों को रोजी रोजगार मिलेगा जिससे दरभंगा जिला की आर्थीक स्थिति में आशापूर्ण बदलाव की संभावना है।

मेर शोध का उद्देश्य यह होगा कि किस प्रकार का दर्शनीय स्थन है, जो इस जिला में है, उसका पूर्ननिर्माण किया जाय साथ ही यातायात के प्रमुख साधनों यथा रेल, सड़क, हवाई मार्ग विकसित हो वैसी स्थिति में दूर दूर से पर्यटक यहॉ आ सकते है, जिससे विभिन्न तरह के रोजी राजगार लोगो को मिलेगें। यदि यातायात के साधन एवं आधारभूत संरचना को सदृढ़ एवं विकसित किया जाय, तो वैसी स्थिति में दरभगा एक विशाल पर्यटन स्थ्ल का रूप लेगा, यहॉ पर्यटन स्थल का विकास ही कृषि कार्य की विभिन्न कारणें से नही हो पाते है।

यदि ऐसी स्थिति में पर्यटन का विकास कर लिया जाता है तो यह पर्यटन की दृश्टि से दर्शनीय स्थल नही रहेगा बल्कि उद्योग का रूप ले लेगा जौसे कि गया आर वैशाली ने ले लिया है। जब पर्यटक यहॉ आना प्रारंभ कर देंगे तो वैसी स्थिति में छोटी मोटी रोजगार मिलेगा। इतना ही नही पर्यटक के चलते व्यपार भी विकसित होगा, वसर्ते इन सब उद्देश्यों को पूरा करने के लिए सरकार प्रर्याप्त धन उपलब्ध कराये और

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

दरभंगा जिला को पर्यटन क्षेत्र के रूप में विकसित करने के लिए मास्टर प्लान बनाये और मास्टर प्लाान का समय सीमा में पुरा कर लिया जाय, तो वैसी स्थिति मे बहुत सारे गरीब और बेसहारे को आय की प्रप्ति होने लगेगी, जो निसंदेह ही इस क्षेत्र के विकास को बढ़ायेगा।

उद्देश्य–

1. पर्यटन के आकर्षण के कारणों का विश्लेषण ।
2. पर्यटकों की संख्या में वृद्धि के तथ्यों का विशलेषण।
3. पर्यटन केंद्र के कारण क्षेत्र की अर्थ व्यवस्था पर रहे प्रभावों का अध्ययन।
4. पर्यटन क्षेत्र की समस्याओं का अध्ययन एवं समस्याओं को कम करने के व्यवहारिक उपायों का विश्लेषण।
5. अध्ययन क्षेत्र के दर्शनीय स्थलों की विशेषताओं व महत्व को जानना।
6. दरभंगा जिला के भौगोलिक स्वरूप का विशलेषणत्मक अध्ययन।
7. सामाजिक –आर्थिक व सांस्कृतिक क्षेत्र में पर्यटन के प्रभावों की समीक्षा।

शोध की परिक्लपना :–

प्रस्तुत शोध परूप निम्न अध्ययन की परिक्लपनाओं को सत्यापित करेगी –

- पर्यटन के द्वारा व्यपार, ज्ञान, शिल्प मनोरंजन को और अधिक बढावा मिलता है।
- पर्यटन उद्योग से रोजगार के स्तर सुधारते है।
- पयर्टन राष्ट्रीय आय एवं विदेशी मुद्रा में वृद्वि का प्रमुख श्रोत होता है।
- उचित एवं उपयुक्त पबंध के द्वारा संस्कृतिक एवं पर्यटन स्थलों को सुरक्षित रखा जाता है।
- दरभंगा जिला के पर्यटन अवस्थापनाओं में सहायक बनेगा।
- अध्ययन क्षेत्र के दर्शनीय स्थलो का महत्व एवं विशेषता को समझने में सहायक बनेगा।
- दरभंगा जिला का आर्थीक एवं समाजिक विकास वर्तमान परिवेश में पर्यटन पर विशेष रूप से आश्रीत है।

अध्ययन क्षेत्रः–

25^0–53'–26^0–27' अक्षांश उत्तर व 85^0–25'–86^0–25' देशान्तर पूर्व में अवस्थित दरभंगा जिला का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 2516.29 वर्ग कि0 मी0 है। जिले में 3 अनुमंडल एवं 18 प्रखंड है। दरभंगा जिला का इतिहास काफी गौरव शाली है, 1325 ई0 में रचित मैथिली गद्य ग्रंथ कवि शेखर ज्योतिरी" वर वर्ण, रत्नाकार में वर्णन है कि दारिपाद नामक एक सिद्ध तांत्रिक ने जिस स्थान पर प्रवचन करने के साथ निवास किया था, वहीं स्थान आज दरभंगा है, कहते है कि अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से बीसर्वी शताब्दी के मध्य तक दरभंगा नगर खंडवाला ब्राह्मणकुल की राजधानी रहा है। दरभंगा संप्रति मिथिला तीर मुक्ति अथवा तिरहुत का पर्यायवाची शब्द बन गया है।

जिले की मुख्य नदियाँ बागमती, कमला एवं कोशी हैं। यहाँ के मुख्य पर्यटन स्थल श्यामा मंदिर, अहिल्या स्थान, कुशे" वर स्थान ब्रह्मपुर, दरभंगा टावर, मस्जिद, मखदुम बाबा का मजार, कटरा (बेनीबाद) का भगवती मंदिर, काली मंदिर, हाजारीनाथ मंदिर, संकटमोचन स्थान, सती स्थान (शुभंकरपुर) चंद्रधरी मिथिला संग्राहलय आदि है। वर्तमान में हमारा विश्वविद्यालय दरभगा महराज के महलों में अवस्थित है। आगंतुकों के आर्कशण का केन्द्र रहा हैं इसे भी विकसित कर पर्यटन का केन्द्र बनाया जा सकता है। यहाँ के हायाघाट में अशोक पेपर मिल (बड़ा उद्योग) है। इसके अलावा कुछ कुटीर उद्योग भी हैं। लाह की चुड़ियाँ, मिथिला

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

पेंटिंग आदि के क्षेत्र में भी इस जिले की अपनी एक अलग पहचान है। जिले में अधिकतर निर्धन लोग है। आर्थिक विपन्नता तथा स्थानीय स्तर पर रोजगार के अभाव के कारण तथा आधारभूत संरचना के समुचित विकास से ही इस जिला का आर्थिक विकास संभव है।

पर्यटन का महत्व :–

पर्यटन की आवश्यकता पर विचार करते हुये यह स्पष्ट हुआ कि विभिन्न दृष्टीकोणें से पर्यटन का अतीव महत्व है। प्रारम्भिक चरण में यात्राएं उल्लिखित आवश्यकताओं के संदर्भ में ही की गई किन्तु समय के साथ– साथ पर्यटन के स्वरूप एवं सरचना में निरंतर परिर्वतन हाता गया और वर्तमान समय में यह अपनी आवश्यकता हुये एक उद्योग के रूप में वृद्धि एवं विकास पर अग्रसर है।

अध्ययन पद्धति एवं श्रोतः–

प्रस्तुत शोध कार्य को संपादित करने के लिए विश्लेषनात्मक अध्ययन पद्धति का सहारा लिया जाएगा। इसके अन्तर्गत विभिन्न माध्यम से प्राप्त तथ्यों, सरकार द्वारा प्रकाशित प्रतिवेदनों, सरकार द्वारा निर्धारित विभिन्न नीतियों, रिजर्व बैंक का बुलेटिन, तत्संबंधी अन्य प्रकाशित साहित्य, पत्र–पत्रिकायें, संसद की कार्यवाही, कार्य योजना आदि का अवलोकन किया जाएगा। अध्ययन की विश्वसनीयता, उद्देश्य एवं प्राक्कल्पनाओं के सत्यापन के लिए द्वितीय श्रोतों से प्राप्त तथ्यों का सहारा लिया जायेगा और विषय का सुस्पष्ट करने के लिए प्रथमिक गणना पद्धति के अंतरगत जिला में अवस्थित विभिन्न पर्यटन स्थलों का भ्रमण एवं अन्वेशन किया जाएगा। जिसके अंर्तगत अवश्यकतानुसार जगह–जगह पर पाये जाने वाले पर्यटन स्थल के संर्दभ में उस क्षेत्र में जानकारी प्राप्त कर विषय की उपाध्यता को बढाने कि कोशिश की जायेगी। इसके लिए बिहार सरकार के पुरातत्व से भी मदद लि जायेगी तत्पश्चात विषय का विशलेषण इस जिले में है, उसे उजागर करते हुए, उसके विकास के लिए किये जाने वाले उपायों की भी चर्चा होगी।

पर्यटन के नये उत्पाद –

पर्यटन मंत्रालय द्वारा विकास तथा संवर्धन के लिये निम्नलिखित उत्पादों की पहचान की हैः क्रूज पर्यटन, रोमांचकारी पर्यटन, चिकित्सा पर्यटन, निरोगता पर्यटन, पोलो पर्यटन, बैठक प्रोत्साहन सम्मेलन एवं प्रदर्शनी (एम.आई.सी.ई.) फिल्म पर्यटन।

निष्कर्षः–

इस प्रकार कहा जा सकता है कि बिहार के समग्र विकास में पर्यटन केन्द्रीय धुरी बन सकता है इस तरह 2015 का ''बेस्ट टूरिज्म स्टेट अवार्ड'' पाने के बावजूद भी पर्यटन व्यवसाय को विकसित करने तथा संतुलित बनाने की आवश्यकता है। उल्लेखनीय है कि भौगोलिक भ्रमण, क्षेत्रीय सर्वेक्षण, परियोजना कार्य एवं शोध कार्य के रूप में भूगोलवेत्ता पर्यटन विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकते हैं। पर्यटन के समुचित प्रबंधन और नियोजन में प्रशासकीय पहल स्वयंसेवी संगठनों की भूमिका सामाजिक सहभागिता एवं जन जागरूपता की आवश्यक है। यदि बिहार में पर्यटन विकास पर ध्यान दिया जाए तो पर्यटन विकास के नये आयाम स्थापित करता हुआ बिहार राज्य को अन्तर्राष्ट्रीय विश्व के मानचित्र पर दर्शा सकेगा। पर्यटन संसाधनों, सुविधाओं और सेवा की क्षमता की संभावनाओं के कारण भारतीय एवं बिहार पर्यटन के विस्तार और विकास की पर्याप्त गुजाइंश है।

संदर्भ सूची :–

i. मैथीसन, ए.एण्ड वॉल, जी. टूरिज्मः इकौनोमिक, फिजिकल एन्ड सोशल इम्पैक्ट्स (1980) लौंगमैन न्यूयार्क पृष्ठ 97।

ii. कौल आर0 एन0 (1985), डायनामिक्स ऑफ टुरिज्मः ट्राईलोजी, वो0 1 फेनोमेनन वो0 2 एकमोडेशन, वो0 3 ट्रन्सपोटेशन एण्ड मारर्केटिंग, स्टेरलिंग पब्लिशरर्श, नई दिल्ली।

iii. मिश्रा, आर0 पी0, भार्मा, एस0 एस0 आर्चाया, राम (1981) वर्ल्ड टुरिर्ज्म, डेल्ट इन्टरनेशनल, जायपुर।

iv. नेगी जगमोहन (1990), टुरिज्म एवं टवलः कौनसेप्टस, गीतंजली पब्लिशिग हऊस, नई दिल्ली।

v. गुप्ता भी0 के0 (1987) टुरिज्म इन इण्डिय, ज्ञान पब्लिशिग हऊस, नई दिल्ली।

vi. वार्षिक रिपोर्ट 2014–15, भारत सरकार, नई दिल्ली, पृ. 130 ।

vii. आर्थिक सर्वेक्षण, 2014–15, भारत सरकार, नई दिल्ली, पृ. 118–120।

viii. बिहार राज्य पर्यटन विकास निगम लिमिटेड, पर्यटक मेप, टूरिस्ट सर्किटल (2015)।

ix. कुमार, कपिल (2007) पर्यटकों एवं मेजवानों को समझना, प्रकाशकः इग्नू नई दिल्ली।

x. भारत सरकार योजना आयोग वार्षिक रिपोर्ट, 2014–15 पृ.– 65 ।

xi. रावत, ताज (2004) पर्यटन एवं यात्रा के सिद्धांत, प्रकाशकः तक्षशिला प्रकाशन नई दिल्ली।

xii. नेगी जगमोहन (2007) पर्यटन का प्रभाव एवं प्रबंधन, प्रका" ाकः तक्षशिला प्रकाशन नई दिल्ली।

www.ijahms.com